ENCLOSURE -10
(3)

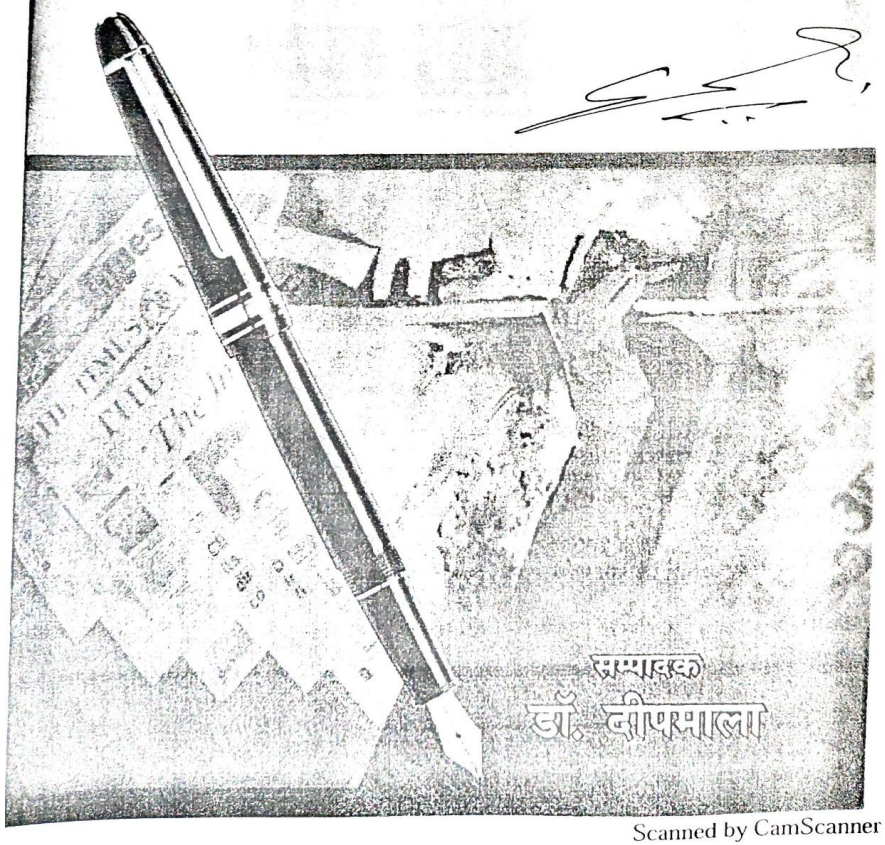

साहित्य, मीडिया और हिंदी लेखन

सम्पादक

डॉ. दीपमाला

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

© डॉ. दीपमाला

ISBN : 978-93-88011-15-0

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिज़ाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 650 (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 20 (अन्य देश)

SAHITYA, MEDIA AUR HINDI LEKHAN
EDITED by Dr. Deepmala

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

	दो शब्द...	iii
	संपादक की कलम से...	v
1.	मीडिया का बाजार डॉ. संध्या वात्स्यायन	11
2.	मीडिया में चर्चित पत्रकार डॉ. सुरेश्वर त्रिपाठी सुमन रानी	16
3.	पत्रकारिता में भारतीय स्वर नरेश कुमार सिहाग	24
4.	मीडिया में हिंदी भाषा डॉ. संगीता वर्मा	29
5.	मीडिया के बदलते परिदृश्य डॉ. दीनदयाल	34
6.	कविता और सिने-गीतों का अन्तर्सम्बन्ध डॉ. अर्चना गौर	40
7.	विज्ञापन की भाषा और हिन्दी डॉ. माला मिश्र	45
8.	इंटरनेट और हिंदी पत्रकारिता डॉ. शैलजा	56
9.	समाज, सत्ता और मीडिया डॉ. चन्द्रकान्त तिवारी	64
10.	साहित्य, मीडिया और हिंदी लेखन महेन्द्र प्रताप सिंह	77
11.	वैश्विक स्तर पर मीडिया और हिन्दी का बदलता स्वरूप डॉ. बलबीर कुंदरा	83
12.	'आज तक' की वेबसाइट पर साहित्य के कंटेंट की पहुँच और इसके प्रभाव का अध्ययन डॉ. आदर्श कुमार	88

Scanned by CamScanner

मीडिया का बाजार

डॉ. संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

पत्रकारिता के मुद्रित माध्यम की शुरुआत के केंद्र में लाभ भले ही प्रतिशत में ज्यादा न रहा हो, लेकिन रहा जरूर है। जनसंचार माध्यमों की शुरुआती कहानी तो यही कहती है कि जनता के साथ सरकार को और सरकार के साथ जनता को कैसे जोड़ा जाए। पश्चिम में जनसंचार माध्यमों का उपयोग राजनीतिक तंत्र के रूप में किया गया। भारत में प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से पूर्व पश्चिमी देशों में प्रिंटिंग प्रेस से होने वाली खबरें किसी-न-किसी तरह से पहुँचती रही थीं और जैसे ही भारत में प्रिंटिंग प्रेस आया, वैसे ही आश्चर्यजनक ढंग से भारत की लगभग हर प्रमुख भाषाओं में एक क्रांति-सी हो गई। प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से हिन्दी में भी आमूल-चूल परिवर्तन हुए। हिन्दी पत्रकारिता का उदय लगभग इसी परिवर्तन के दौरान हुआ। इस पूरे परिदृश्य को ध्यान में रखें तो प्रिंटिंग प्रेस और उससे निकलने वाली हिन्दी पत्रकारिता का संबंध लाभ और व्यवसाय का कम, जनजागरण का अधिक दिखता है। यह हिन्दी पत्रकारिता का शुरुआती दौर है। बात चाहे भारतेंदु हरिश्चंद्र की करें या आजादी की लड़ाई में जनसंचार माध्यमों को राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने की, दोनों ही अवस्थाओं में जनसंचार माध्यमों की भूमिका जनकल्याणकारी ही रही है। भारत अपने स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर बेहद स्पष्ट था और जनसंचार की भूमिका को भी महत्त्वपूर्ण मानता था। "1938 में कॉंग्रेस की नेशनल प्लानिंग कमेटी–जिसके अध्यक्ष पं. नेहरू थे, संचार माध्यमों के महत्त्व को समझा और यह महसूस किया कि जनसंचार माध्यम विलास का नहीं विकास का माध्यम है।" इस समय तक मीडिया को बाजार के भरोसे नहीं छोड़ा गया था और यही कारण है कि वह जनकल्याणकारी भूमिका से अलग नहीं हुआ था।

भारत विकसित देश नहीं है, यहाँ कि जनता पूर्ण साक्षर नहीं है और इसी कारण पूर्ण आधुनिक होने की प्रक्रिया में काफी पीछे है। हमारी गरीबी ही हमारी

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

Scanned by TapScanner

ENCLOSURE - 10
(2)

218

219

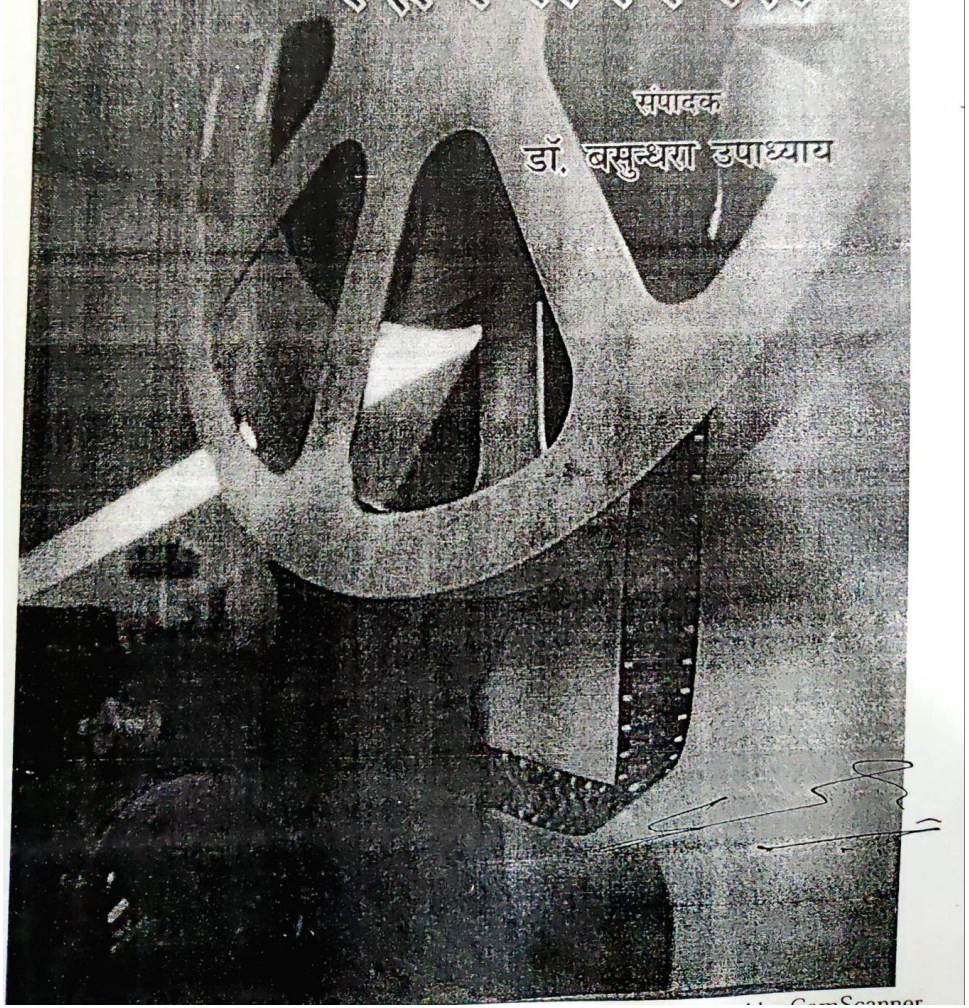

ISBN : 978-93-88011-31-0

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमाडौं, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 150/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

HINDI SAHITYA AUR CINEMA VIMARSH
Edited by Dr. Basundhara Upadhyay

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

भूमिका 5

1. बँगला साहित्य और सिनेमा 9
डॉ. मो. माजिद मियाँ

2. हिंदी साहित्य और सिनेमा 17
प्रो. इंदुमति एस.

3. हिंदी साहित्य और सिनेमा 23
डॉ. जी.जे.के. भारती

4. वर्तमान दौर के भारतीय जनजीवन का हिंदी सिनेमा में चित्रण (विशेष संदर्भ-नारी का बदलता स्वरूप) 30
डॉ. मोहम्मद इसराइल

5. भारतीय समाज तथा सिनेमा में स्त्री 40
डॉ. चिलुका पुष्पलता

6. हिंदी साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध 46
डॉ. मधु मिश्रा

7. हिंदी साहित्य और सिनेमा का संबंध 52
डॉ. नीलम देवी

8. हिंदी सिनेमा का बाल-पक्ष 57
डॉ. वसुधरा उपाध्याय

9. हिंदी साहित्य और सिनेमा 61
डॉ. राहुल उठवाल

10. हिंदी साहित्य और सिनेमा 68
डॉ. सुमन

11. समानांतर सिनेमा एवं साहित्य 74
डॉ. संध्या वात्स्यायन

12. हिंदी सिनेमा और भारतीय भाषाएँ 78
डॉ. आरिफ जमादार

13. फिल्म एवं साहित्य : संवेदनात्मक अभिव्यक्ति 83
डॉ. आभा लता चौधरी

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

समानांतर सिनेमा एवं साहित्य

डॉ. संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय सिनेमा ने लंबे संघर्षों के बाद, नई उपलब्धियों, स्पेशल इफेक्ट्स के जुलाई को 115 वर्ष पूरे किए। जो किसी भी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। भारतीय सिनेमा का इतिहास देखें तो यह एक विचित्र संयोग ही है कि हित्य का प्रथम इतिहास ग्रंथ "इस्त्वार द ला लितरेत्यूर एंदुई एंदुस्तानी" विद्वान गार्सां द तासी द्वारा लिखा गया और भारतीय सिनेमा का प्रारंभ भी सी ल्यूमियर बंधुओं (आगस्ट और लुई) के माध्यम से हुआ।[1]

तीय दर्शकों के लिए छायाचित्रों के माध्यम से दृश्यों का चलना किसी स नहीं था। भारतीय सिनेमा में सावे दादा पहले ऐसे भारतीय थे जिन्होंने बनाए। दादा साहेब फाल्के ने भारतीय सिनेमा को वृत्तचित्र से निकालकर की दुनिया में पहुँचाया। इनकी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' थी, जो 'मूक कथा फिल्म' है। इसे पहली भारतीय फिल्म कहने के पीछे का कारण यह दिनों विदेशी फिल्मों का ही बोलबाला था और भारत में विदेशी फिल्में ही ती थीं।

विदेशी फिल्म "ए डेड मैंस चाइल्ड" के साथ पहली बार भारतीय फिल्म लिक" दिखाई गई थी। "भक्त पुंडलिक" अपने-आप में स्वतंत्र फिल्म के एक नाटक का फिल्मांकन था।[2] जबकि 'राजा हरिश्चंद्र' पूर्ण रूप ाचर फिल्म थी। उस समय किसी अभिनेत्री का आगमन नहीं हुआ था, सिखारों की युवतियों का रंगमंच में आना व अभिनय करना अच्छा नहीं ता। मूक सिनेमा के दौर से निकलकर फिल्म ने बोलना शुरू किया। बोलती फिल्म 'आलमआरा' बनी जो सन् 1931 ई. में आई। करीब न संघर्ष में भारतीय सिनेमा को बोलना-चलना सिखाया। आज के ने पर्दे पर हर असंभव को संभव बना दिया है। सन् 1936 में

Scanned by TapScanner

ENCLOSURE – 10
(1)

भक्तिकालीन कविता

भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

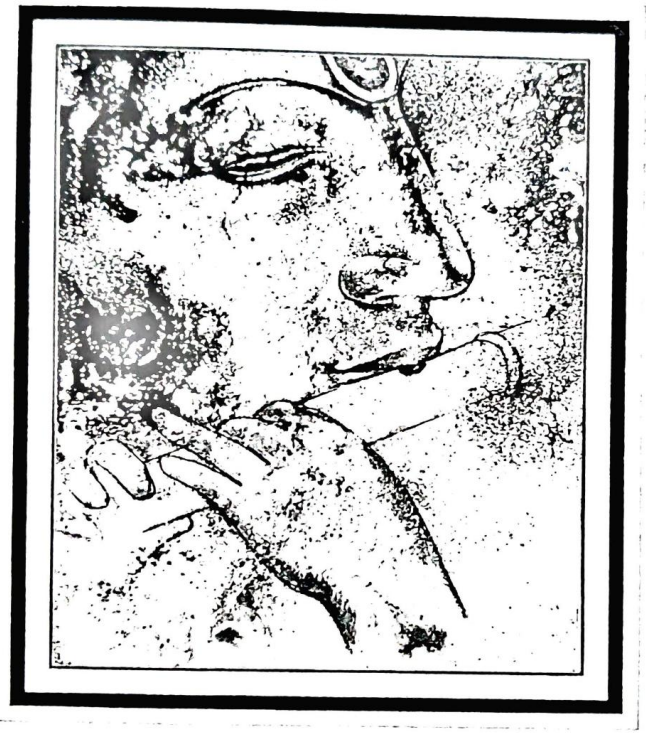

सम्पादक
हरीश अरोड़ा

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

© संपादक

ISBN : 978-93-88011-09-9

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 7000/- (7 भागों में सम्पूर्ण) (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 150/- (अन्य देश)

BHAKTIKALEEN KAVITA : BHARTIYA SANSKRITI KE VIVIDH AAYAM
Part-6
Edited by *Dr. Harish Arora*

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

43. कबीर की नारी-विषयक संवेदना 352
डॉ. राजकुमार यादव

44. राम की लीला 356
डॉ. विधु खरे दास

45. बौद्ध साहित्य पाली त्रिपिटक का रामचरितमानस पर प्रभाव 360
डॉ. वंदना कुमारी

46. भक्तिकालीन काव्य में भक्ति एवं दर्शन 365
डॉ. संध्या वात्स्यायन

47. सूफी काव्यों में भारतीय संस्कृति 372
डॉ. नजमा एम. अंसारी

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

भक्तिकालीन काव्य में भक्ति एवं दर्शन

डॉ. संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन है। भक्ति साहित्य जनता की सामूहिक चेतना का साहित्य है। यह आंदोलन जितना सांस्कृतिक है उतना ही वैचारिक भी। 'भक्ति' इसके केंद्र में है। भक्ति में धर्म साधना की अपेक्षा भावना का विषय बनता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्ति को "धर्म का रसात्मक रूप" कहा है। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, रैदास, मीरा जैसी-महान विभूतियों ने भक्ति-काव्य को समृद्ध किया। भक्तिकाव्य आंदोलन के दौरान जिन रचनाओं का निर्माण हुआ उनका स्थान विश्व-साहित्य में अग्रगण्य है। इन्हीं ऐतिहासिक उपलब्धियों के कारण भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल कहा गया।

लेकिन प्रश्न है कि भक्तिकाल को स्वर्णकाल की उपलब्धि दिलाने वाले वे कौन से तत्व हैं जो उसे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक आधार प्रदान करते हैं। वे तत्व हैं- भक्ति एवं दर्शन। भक्ति एवं दर्शन तत्व ही भक्तिकाल को समृद्ध करते हैं। भक्ति क्या है? भक्ति का स्वाभाविक अर्थ क्या है? उसका स्वरूप क्या है। भक्ति काव्य में भक्ति एवं दर्शन को किन मानदंडों से परखा गया जिससे उसकी समृद्धि निखरी। सर्वप्रथम हम 'भक्ति' पर चर्चा करेंगे।

'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है जिसका आशय है-भजनान। नारद के अनुसार भक्ति 'परमप्रेम रूपा' और 'अमृत स्वरूपा' है जिसे प्राप्त कर मनुष्य सिद्ध, अमर तथा तृप्त हो जाता है-

सात्वस्मिन् परमप्रेम रूपा अमृत
स्वरूपा च
यल्लब्ध्वा पुमान सिद्धो भवति अमृतो
भवति तृप्तो भवति।

शाण्डिल्य भक्ति सूत्र के अनुसार ईश्वर में परम अनुरक्ति ही भक्ति

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

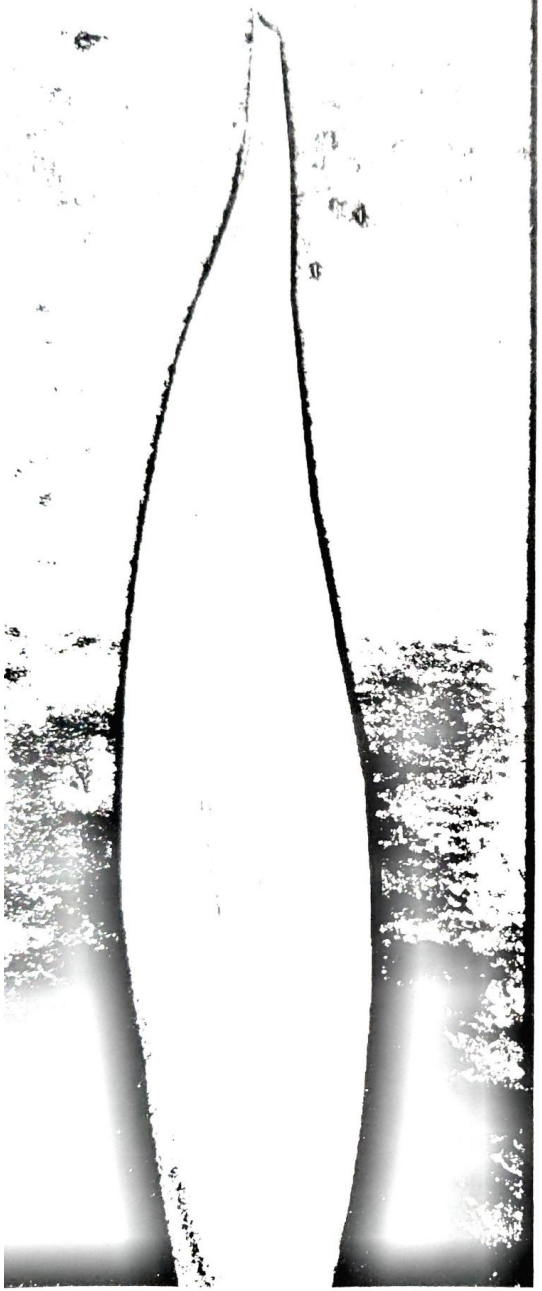

डायस्पोरा साहित्य संगम

महात्मा गांधी संस्थान,
मोका, मॉरीशस

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

ISBN	:	978-99949-948-3-0
प्रकाशक	:	महात्मा गांधी संस्थान मोका, मॉरीशस
मुद्रक	:	ड्रैगन प्रिंटिंग क. लि. पोर्ट लुइस, मॉरीशस
© कॉपीराइट	:	महात्मा गांधी संस्थान
संस्करण	:	2018
आवरण चित्र *(ब्रह्माणडीय-ध्वनि)*	:	श्रीमती माला चमन-रामयाद
टंकण और पृष्ठ सज्जा	:	श्रीमती करिश्मा देवी रामझीतन-नारायण सुश्री दिशा प्रताब श्रीमती रक्ष लीलोधारी
मूल्य	:	४०० रुपए *(Rs. 400)*

DIASPORA SAHITYA SANGAM
(Collection of Creative Writing & Criticism of Diaspora Hindi Literature)

© Mahatma Gandhi Institute
Moka, Mauritius

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

प्रवासी साहित्य में प्रवास की पीड़ा एवं द्वंद्व

डॉ. संध्या वात्स्यायन
भारत

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की एक प्रसिद्ध रचना है – 'प्रिय प्रवास'। श्रीकृष्ण प्रवास के दौरान मथुरा चले जाते हैं। और पीछे छोड़ जाते हैं – ब्रज के निवासियों को, माता-पिता को और प्रेमिका राधा को! साहित्य में ब्रज वासियों, माता यशोदा, गोपियों के साथ-साथ राधा की वियोग पूर्ण दशा का पर्याप्त वर्णन मिलता है। परन्तु श्रीकृष्ण का, प्रवास के दौरान बृज और मथुरा को लेकर, उभरते द्वंद्व एवं पीड़ा के चित्रण में कवियों ने रुची नहीं ली। कृष्ण की पीड़ा को समझने हो तो प्रवासी साहित्य में अंतर्निहित 'प्रवास' की पीड़ा एवं उसमें छिपे द्वंद्व को समझना होगा। यह द्वंद्व एवं पीड़ा साधारण नहीं है। अपनी जड़ों, अपनी भाषा से उखड़ने की जो पीड़ा है, दूसरी ज़मीन पर बहुत ही कम पनपती है।

'प्रवास' की पीड़ा को समझने से पहले 'प्रवास' का अर्थ समझना आवश्यक है। 'प्रवास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – अपने क्षेत्र देश से अलग किसी अन्य प्रदेश में जाकर रहना। प्रवास करने वाले व्यक्ति को 'प्रवासी' कहा जाता है। प्रवासी साहित्य से तात्पर्य है – वह साहित्य जो विदेश में रह रहे प्रवासियों के जीवन को आधार बनाकर लिखा गया हो। परन्तु प्रवासी साहित्य के सन्दर्भ में तेजेंद्र शर्मा के विचार अलग हैं – "लेखक प्रवासी हो सकता है मगर साहित्य प्रवासी नहीं हो सकता। जिस तरह हम मुंबई, कलकत्ता या दिल्ली के साहित्य को प्रवासी नहीं कहते, जबकि वहाँ के अधिकतर हिन्दी लेखक पहली पीढ़ी के निवासी होते हैं, ठीक उसी तरह हमें ब्रिटेन या यू.एस.ए. के हिन्दी लेखन को भी प्रवासी साहित्य कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। .... प्रवासी शब्द को गुणवत्ता से ना जोड़ा जाए और ना ही उसे बेचारा समझकर आरक्षण कोटा दिया जाए। जो जैसा लिखे उसे उसी तरह लेखक समझा जाए। मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन और बाकी विश्व का हिन्दी लेखन एक ही नाम पट्टी के तहत प्रवासी कैसे कहला सकता है।"[1] प्रवासी के जीवन का द्वंद्व एवं उससे उत्पन्न पीड़ा के कई कारण होते हैं। जिनमें – अपने देश से पराये देश का वातावरण, भेदभाव, मोहभंग, समायोजन की समस्या, परायापन, भाषा की समस्या, दोहरा जीवन प्रमुख हैं। इसी दोहरेपन की वजह से प्रवासी जीवन गहरे अकेलेपन एवं पीड़ा से गुज़रता है। दोहरे जीवन शैली से गुज़रते प्रवासियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्यामाचरण दुबे ने लिखा है – "ये वे लोग हैं जो विदेशों में भारतीय एवं भारत में विदेशी जीवन-शैली और मूल्यों के साथ जीते हैं। उनकी जड़ें भारतीय परंपरा में नहीं होतीं, पर साथ ही उनका पश्चिमीकरण भी बहुत सतर वाला होता है। वे पश्चिमी संस्कृति के बाह्य लक्षणों का अनुकरण करते हैं, पर गहराई में जाकर उसकी आत्मा से साक्षात्कार करने से कतराते हैं। साथ ही वे पश्चिमी संस्कृति की सुख-सुविधाएँ और स्वच्छंदता तो चाहते हैं पर उससे होने वाला सांस्कृतिक अवमूल्यन उन्हें चिंतित करता है वे जो हैं उसे न जीना और जो नहीं है उसे जीना उनकी नियति है।"[2] प्रवासी जीवन के इसी दोहरेपन पर सुधीश पचौरी ने तल्ख टिप्पणी करते हुए लिखा – "प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है। एक ही वक्त में दो दुनियाओं को

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

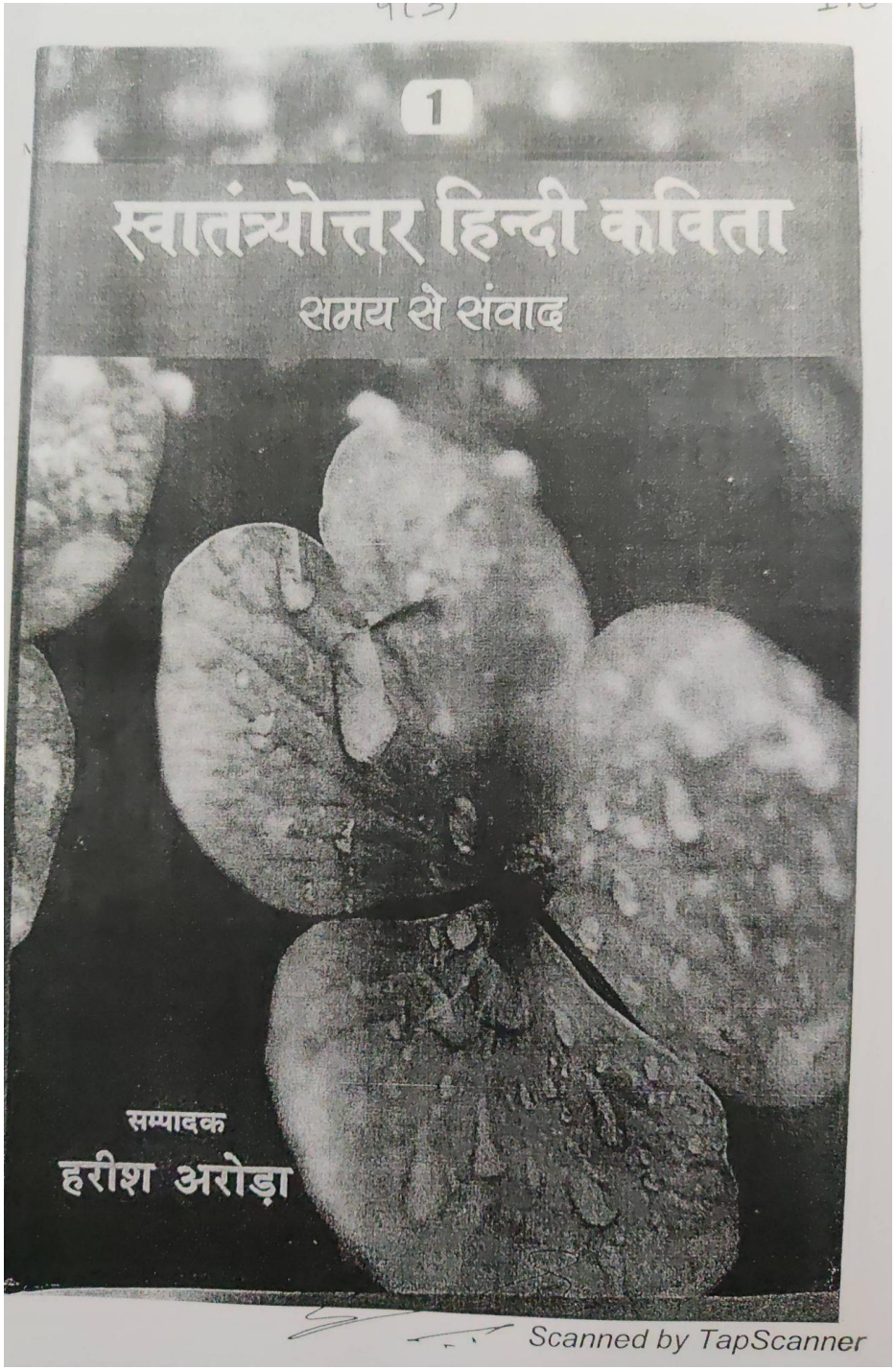

Scanned by TapScanner

9(3)

141

© लेखक

ISBN : 978-93-82597-72-8

प्रकाशक
साहित्य संचय
वी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : वहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (विहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : एम डी सलीम

मूल्य : ₹ 995/- (भारत, नेपाल) **(4 भागों में सम्पूर्ण)**
मूल्य : $ 15/- (अन्य देश) **सैट का मूल्य : ₹ 3500/-)**

SWATANTRYOTTAR HINDI KAVITA NAYE RACHNATMAK SAROKAR
Part-1
Edited by Dr. Harish Arora

साहित्य संचय, वी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

Scanned by TapScanner

9(3)

अनुक्रम

1. युवा कविता : तब और अब 15
डॉ. नरेंद्र मोहन
2. समकालीन कविता : एक विमर्श 24
दिविक रमेश
3. धर्मवीर भारती : हर भूखा आदमी बिकाऊ नहीं होता 40
प्रो. देवराज
4. नवगीत का नया परिदृश्य 53
प्रो. राजेंद्र गौतम
5. त्रिलोचन की छांदस चेतना 69
डॉ. भारतेंदु मिश्र
6. हिंदी में आदिवासी कवयित्रियों के काव्य में आदिवासी जीवन-यथार्थ 78
प्रो सुखदेव सिंह मिन्हास
7. नव-स्वच्छंदतावादी गीत-रचना : एक दृष्टि 86
डॉ. रामनारायण पटेल
8. आदिवासी अस्मिता और स्वातंत्र्योत्तर कविता 91
प्रो. मीनाक्षी श्रीवास्तव
9. प्रवासी हिंदी कविता और भारतीय संस्कृति 97
डॉ. कमलेश कुमारी
10. उत्तर-आधुनिक समाज और नवगीत 110
डॉ. रचना बिमल
11. नई कविता में प्रेम का स्वरूप 119
डॉ० चंद्र प्रकाश मिश्र
12. आदिवासी कविताओं में अस्मिता की उभरती चेतना 126
डॉ० स्नेहलता नेगी
13. साठोत्तरी हिन्दी कविता (1960-80) 132
डॉ. नीरव अडालजा
14. समकालीन कविता (स्त्री-अस्मिता एवं विविध मानवीय संदर्भ) .. 139
डॉ. ज्योति शर्मा
15. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की प्रखर ध्वनि 146
डॉ. संध्या वात्स्यायन

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की प्रखर ध्वनि

डॉ. संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी-विभाग)
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

'राष्ट्र' शब्द किसी जाति, संप्रदाय, धर्म, निश्चित भू-भाग आदि तक सीमित न होकर व्यापकता लिये होता है जिसमें सभी जातियाँ, विभिन्न भू-खंड, संप्रदाय, रीति-रिवाज सम्मिलित हैं। 'राष्ट्रीय' शब्द अपने वर्तमान समय में आधुनिक माना गया है। भारतवर्ष की एकता के अर्थ में राष्ट्रीयता का विकास आधुनिक काल में हुआ। अँग्रेजी शासन के विरुद्ध मुक्ति की चेतना किसी धर्म या जाति तक सीमित न रहकर पूरे देश में फैली। जिस राष्ट्रीयता के स्वरूप का विकास आधुनिक काल में हुआ उसमें एक तरफ तो देश में अंग्रेजी शासन की स्थापना थी, तो दूसरी तरफ अँग्रेजी शासन की यातना को भारतीय जनता द्वारा समान रूप से अनुभव किया जाना था। वहीं एक स्वरूप और भी दिखाई पड़ता है और वह है–स्वाधीनता-आंदालेन का देश-भर में प्रसार।

पश्चिम से विकसित हुई राष्ट्रीयता का अर्थ भारत में कुछ भिन्न रूप में उभरा। इसके भी अपने कारण रहे। भारतीय राष्ट्रीयता जहाँ स्व-रक्षा की भावना से युक्त था वहीं पश्चिमी देशों में स्व-विकास का महत्त्व था। भारत जैसे विशाल देश में जो बहुआयामी, बहुसांस्कृतिक व बहुभाषी है, वहाँ लोग ऊपर से भले ही अलग-अलग दिखाई पड़ते हों किंतु उनको बाँधने का स्रोत उसकी अपनी प्राचीन संस्कृति और प्राचीन आध्यात्मिक सत्य ही है। इस तरह राष्ट्रीयता में तीन मुख्य बातें हमारे सामने आती हैं–पहली पराधीन होने का बोध व उससे मुक्ति पाना, दूसरी पश्चिमी सभ्यता के आने से जो अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो रही थी उससे भारतीयों में अपनी संस्कृति को लेकर एकता और स्वाभिमान का आना और तीसरी आधुनिक मूल्यों को लेकर पुनर्विचार करना। स्वतंत्रता-प्राप्ति तक पहले दो तत्त्व तो मुखरित रहे, किंतु स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात सिर्फ तीसरा तत्त्व ही शेष रह गया। देश की राजनीतिक व्यवस्था को प्रतिष्ठित करने का प्रयास और नए राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने के

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

© लेखक

ISBN : 978-93-88011-10-5

प्रकाशक

साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 11, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871118244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 1195/- (2 भागों में सम्पूर्ण) (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 55/- (अन्य देश)

VAISHVSHIK PATAL PAR HINDI
Part-1
Edited by Dr. Rama

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner
Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

9(2) 138

46. [illegible] 285
डॉ. सुनीता सिंह
47. [illegible] 292
सरोज बाला
48. भूमंडलीकरण के दौर में [illegible] चुनौतियाँ 298
शिव प्रकाश दास
49. दूरदर्शन तथा फिल्मों का हिन्दी प्रचार प्रसार में योगदान 308
डॉ. मधुछंदा चक्रवर्ती
50. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा शिक्षण : समस्याएँ और समाधान 313
डॉ. शैलजा
51. वैश्विक पटल पर हिंदी 318
नेहा शर्मा
52. भूमंडलीकरण और हिंदी 324
डॉ. बी. संतोषी कुमारी
53. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी 328
सीमा सिंह
54. सर्वश्रेष्ठ वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी : संभावनाएँ और चुनौतियाँ 336
डॉ. मानसी रस्तोगी
55. वैश्विक पटल पर हिंदी 343
नूतन अग्रवाल ज्योति
56. वैश्विक पटल पर हिन्दी में रोजगार के अवसर 349
डॉ. दीपमाला
57. पितृसत्ता और प्रवासी स्त्री-लेखन 358
डॉ. पूनम यादव
58. विश्व पटल पर हिंदी : विस्तार एवं संभावनाएँ 364
डॉ. कर्मजीत कौर
59. हिन्दी : वैश्विक परिप्रेक्ष्य 373
डॉ. सीमा कुमारी
60. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और भाषायी संवेदनहीनता 383
डॉ. संगीता वर्मा
61. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य 388
डॉ. संध्या वात्स्यायन

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

9(2) 139

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

डॉ. संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी भाषा नहीं आत्मा है; एक विचार है। वैश्विक स्तर पर यह विचार यूं ही नहीं फैला। इसका अपना इतिहास है। इतिहास है–अन्याय एवं दमन से गुजरती भारतीय आत्मा का। अपने परिवेश; अपनी मातृभूमि से हज़ारों मील दूर बैठे बेबस भारतीय की टीस का। गिरमिटियों के रूप में भेजे गए उन भारतीयों की अथक मेहनत एवं बलिदान का। आज हम हिंदी को जिस बेहतर स्थिति में देख रहे हैं, उसका केवल और केवल एकमात्र श्रेय उन प्रवासी भारतीयों को जाता है, जिन्होंने प्रवास के दौरान अपनी आत्मा, अपने संस्कारों तथा अपनी भाषा हिंदी का पूरा सम्मान रखा। गिरमिटियों का जब पहला जत्था विविध औपनिवेशिक देशों में भेजा गया तब उनके पास माना गया कि 'मानस का गुटका' और अपनी मातृभाषा थी। इंडोनेशिया, मलेशिया, फिजी, त्रिनिडाड जैसी जगहों पर हिंदी किसी-न-किसी रूप में इन गिरमिटियों के माध्यम से प्रवेश कर चुकी थी। यह एक तरह का 'भाषारोपण' था। जैसे पौधे को अपनी जड़ें जमाने में समय लगता है; वैसे ही भाषा को भी लगा। पर इससे एक बात तो स्पष्ट हो गई कि भाषा रूपी यह पौध आने वाले समय में एक विशाल वृक्ष बनेगा और संपूर्ण विश्व को अपनी छाँव में आने को प्रेरित करेगा। तीन से चार पीढ़ियों के संघर्ष का ही परिणाम है कि हिंदी विश्व की महत्त्वपूर्ण भाषा बन गई है। 1999 मशीन ट्रांसलेशन शिखर सम्मेलन हुआ था। आज से लगभग उन्नीस वर्ष पूर्व उस सम्मेलन में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने जो भाषाई आँकड़े प्रस्तुत किए, उसमें हिंदी को विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा माना गया।[1] चालीस से अधिक देशों में लगभग सौ से अधिक विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। यह संख्या अब और बढ़ चुकी है। हिंदी अब डेढ़ सौ देशों तक अपनी पहुँच बना चुकी है।

हिंदी बोलने-लिखने-पढ़ने तथा अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से राकेश शर्मा निशीथ ने अपने लेख 'विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव' में हिंदी को कुछ इस ढंग

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

ENCLOSURE - 9(1)

132

प्रवासी साहित्य

भाव और विचार

सं. संध्या गर्ग

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

© सम्पादिका

ISBN : 978-93-82597-33-9

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : एम डी सलीम

मूल्य : ₹ 995/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 25/- (अन्य देश)

PRAVASHI SAHITYA : BHAV AUR VICHAR
Edited by Sandhya Garg

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by TapScanner

9(1) 134

अनुक्रम

1. सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में चित्रित समस्याएँ 13
प्रियंका सिंह
2. महिला कथाकार और प्रवासी साहित्य 19
आरती
3. कालिदास का संघर्ष और प्रवासी साहित्य 26
डॉ. मधु कौशिक
4. प्रवासी कथा साहित्य में भाव और परिवेश का द्वंद्व 31
डॉ० संध्या वात्स्यायन
5. प्रवासी जीवन की सिनेमाई अभिव्यक्ति 38
डॉ. ऋतु
6. प्रवासी साहित्य का संघर्ष 45
रंजना सिंह
7. प्रवासी साहित्य में गिरमिटिया समाज 49
डॉ. भारती अग्रवाल
8. प्रवासी साहित्य : पश्चिमी धरती पर बन रहे भावों और विचारों के हाईवे का दस्तावेज 56
डॉ. स्वाति श्वेता
9. तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में भाव एवं विचारों का सौंदर्य 61
डॉ. दत्ता कोल्हारे
10. श्यामनारायण शुक्ल की कहानी जमीला में निहित अंतर्विरोध 67
डॉ. राजमोहिनी सागर
11. हिंदी का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ 72
डॉ. अंजु रानी
12. प्रवासी साहित्य और हिंदी की भूमिका 76
डॉ. संगीता गुप्ता
13. प्रवासी जीवन : विशेष संदर्भ उषा प्रियम्वदा के उपन्यास 81
डॉ. पुष्पा गुप्ता
14. पितृसत्ता और प्रवासी स्त्री लेखन (विशेष संदर्भ कहानियाँ) 91
ेता दुबे

Scanned by CamScanner

प्रवासी कथा साहित्य में भाव और परिवेश का द्वंद्व

डॉ० संध्या वात्स्यायन
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

'भाव' नितांत आत्मिक शब्द है और 'परिवेश' नितांत सामाजिक। भाव एक विचार भी और ख्याल भी। इसे अस्तित्व एवं सत्ता के संदर्भ में भी लिया जाता है। भाव को लेकर कई प्रकार की परिभाषाएँ प्रचलित हैं। पहली परिभाषा "भाव प्रत्येक ऐसा पदार्थ है जो अस्तित्व में आता या जन्म लेता, बढ़ता या विकसित होता तथा अंत में नष्ट हो जाता है।"

"मन में उत्पन्न होने वाले विचार का वह अपरिपक्व आरंभिक और मूल रूप जिसमें उसका आशय या उद्देश्य भी निहित होता है।"

अथवा

"मानस उद्भावना का वह रूप जो परिवर्धित तथा विकसित होकर विचार में परिणत होता है।"

इन प्रचलित अर्थों के अतिरिक्त भाव को भक्ति, विश्वास एवं श्रद्धा से भी जोड़ा जा जाता है। प्रवासी कथा साहित्य के संदर्भ में भी यही अर्थ अधिक प्रासंगिक जान पड़ता है। प्रत्येक परिवेश अपने साथ, भक्ति, विश्वास एवं श्रद्धा में बदलाव लाता ही है। अपने स्वीकार्य भाव एवं परिवेशजन्य भाव में द्वंद्व होना स्वाभाविक है। प्रवासी कथा साहित्य इस द्वंद्व से निरंतर जूझता है। 'गगनांचल' पत्रिका के मार्च-अप्रैल, 2010 के अंक में प्रकाशित परिचर्चा 'प्रवासी साहित्य: कितना प्रवासी कितना साहित्य' में एकाध लेखकों का कहना था कि हिंदी प्रवासी साहित्य में परिपक्वता एवं आधुनिकता की कमी है। एक लेखिका तो प्रवासी हिंदी साहित्य को 'अघाए हुओं का साहित्य' मानती हैं। उनका मानना है कि इस साहित्य में न द्वंद्व है न संघर्ष। यह साहित्य मंदिर-मठों में बैठकर चर्चा किया हुआ साहित्य है। यदि उक्त लेखिका की बात स्वीकार कर ली जाये तो यह प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रति एकांगी दृष्टि ठहरती है क्योंकि भारतीय गिरमिटिया और उनके लिखे साहित्य से जिनका परिचय नहीं है, वही ऐसी

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

Scanned by TapScanner